बाब-53

करतारपुर दे कौतक: भाग-4

(1522 तों 1529 ई.)

करतारपुर दी सथापना नाल हुन गुरू साहब दा मुकाम (Headquarter) बण गया सी। इथों ही फिर गुरू साहब जंमू कशमीर दे बाकी बचे इलाके विच गए ते इथों ही वड्डे पंजाब दियां थां थां फेरियां लई रवाना होया करदे सन। लगदा है कि गुरू साहब दी कोशिश हुन्दी सी घट्टो घट्ट हर महीने दी पुन्या नूं करतारपुर विखे ही हाजर रहन। पर ध्यान रहे 1522 तों 1529 ई तक बहुता समां साहब ने करतारपुर विखे ही गुजार्या सी। पंजाब दे कई मुकामी दौरे चौथी उदासी तों बाद हुन्दे ने ते कदी भायी लहना नाल होया करदे सन।

इस मरहले विच उह घटनावां आ रहियां हन जो उहनां दे करतारपुर साहब बिराजन दौरान वापरियां। (सरोत: ज्यादातर सोढी मेहरबान)

करडारपुर (सैंन 2004)

माता कहन्दी "पुत्ता तूं केहड़े धरम नूं मन्नदै?"

ना तूं सन्यासी, नां तूं जोगी, नां तूं वैसनो, नां तूं साधू, नां तूं फकीर। मैनूं कुझ समझ नही आउदी ?

माता त्रिपता अते पिता महता कालू नूं करतारपुर रहन्द्यां कुझ दिन हो गए सन। हुन तां खुल्लियां गल्लां होणियां शुरू हो गईआं सन। लड़ना झगड़ना। शरीका। सभ कुझ शुरू हो गया सी। माता ने वेख्या कि गुरू नानक तां साधूआं वाले कोयी कंम नही करदा।

माता जी हार के महता कालू जी कोल काना फूसी करदी है कि इथे की चल रेहा है? इह जदों अराधना करदा है नां इह धूप दिन्दा नां अगरबत्ती। इह वरत वी नही रक्खदा। नां इहने कोयी इथे मूरती रक्खी है पूजन लई।इथे वेद सिम्रती पुरान आदि दा पाठ वी नही हुन्दा। नां ही भगवान कृष्ण, राम जी जां शिव जी आदि दी अराधना हुन्दी है। नां भोजन वेले चौका-कार कढ्ढी जांदी है नां ही कदी तरपन कीता जांदा है।लंगर वेले इह जात वरन दा वी भेद भाव नही करदा। इस विच्च वी कोयी शक्क नही कि इह मुसलमान वी नही होया। पर इह केहो जेहा साधू है?

महता जी ने माता त्रिपता नूं आपने हिसाब नाल समझाउन दी कोशिश कीती। माता दी तसल्ली नां होयी ते जा गुरू साहब दे दुआले होयी कि मैनूं वी समझा इथों दा दसतूर। तूं इथे किस तरां दी भगती करदा है नां धूप नां अगरबत्ती?

गुरू साहब ने माता नूं केहा कि तेरी गल्ल दा जवाब मैं संगत विच्च द्यागा। अग्गे तों माता नूं वी केहा कि दोवे वेले संगत कर्या कर। नूंह सस्स सारा दिन चुगलियां विच्च ही नां रहआ करो।

संगत विच्च बह फिर गुरू साहब ने सिरी राग विच्च शबद गाव्या:-

कुंगू की कांया रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥ अठसठि तीरथ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥ ओतु मती सालाहना सचु नामु गुणतासु ॥1॥ बाबा होर मति होर होर ॥ जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥1॥ रहाउ ॥ पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥ नाउ सदाए आपना होवै सिधु सुमारु ॥ जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥2॥ जिन कउ सतिगुरि थाप्या तिन मेटि न सकै कोइ ॥ ओना अन्दरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥ नाउ पूजीऐ नाउ मन्नीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ॥3॥ खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥ जलिया सभि स्याणपा उठी चल्या रोइ ॥ नानक नामि विसारिऐ दरि गया क्या होइ ॥4॥8॥

हेक नाल शबद गाउन उपरंत गुरू साहब ने संगत ते माता पिता नूं उपदेस दित्ता कि निरंकार दी प्रापती दा सभ तों वधियां तरीका उहदा नाम है। उहदी सिफत सलाह। जस्स गाउणा, जस्स बोलना जस्स सुणना। धरम दे नां ते प्रचलत करम कांडा दा उनां खंडन कीता।

—◈—

जदों साधूआं ने गुरू साहब ते सवालां दी बुछाड़ कर दित्ती

जदों दुनिया नूं पता चल गया सी कि गुरू नानक कलानौर लागे धरमसाल बना के टिक गया है तां दूरो नेड़्यो लोक पहुंच रहे सन। कोयी आपना दुक्ख दूर कराउन, कोयी किस कारन ते कोयी किस कारन। पर साधू संत लोक जिन्नां निरंकार दी भाल विच्च आपने घर बार छड्ड दित्ते सन उनां वासते गुरू नानक वाली खबर खास मायने रक्खदी सी। क्युकि हर कोयी कह रेहा सी कि गुरू नानक रब्ब नाल इक मिक्क है। सो करतारपुर विखे साधूआं दा आउना जाना तां खास सी। वहीरां दियां वहीरां इथे तुरियां रहन्दियां सन।

एसे तरां ही साधूआं दा इक टोला आ पहुंचा। गुरू साहब दा जिवे हुकम सी बड़े सतिकार नाल उनां नूं पानी धानी पुच्छ्या ग्या। अराम करन लई मंजे दित्ते गए।

फिर शाम वेले रहरास ते कीरतन तों बाद गुरू साहब ने आ जुड़्ड़े साधूआं नूं झुक्क के नमसकार कीती ते आपने आप नूं धन्न केहा जेहड़ा साधू संतां दे दरशन होए

हन। उहनां विचों इक साधू बोल उठ्या कि गुरू साहब तुहाडी बहुत उपमा सुनी है। सानूं कई साल हो गए ने सन्यास धारन कीते नूं पर मन दे कई सवाल अजेहे ने जिन्नां दा तसल्लीबखश जवाब अजे तक्क नही मिल्या।

गुरू साहब ने अकाल पुरख अगे अरदास कीती कि ऐ निरंकार मैनूं बुद्ध बखशो कि मैं इनां जग्यासूआं दी तसल्ली करा सकां।

साधूआं तां फिर इक तों बाद इक सवालां दी झड़ी ही ला दित्ती:-

- इह धरती की है?
- इह पाउन, पानी दी की कहानी है?
- खाणियां दी की कहानी है?
- अग्ग की है?
- जी इह जिय दी की कहानी है? प्रानी की है?
- हर जिय दा सरूप वक्खरा वक्खरा क्यो है?
- बन्दे नूं सुआद क्यो आउदे हन? इह मिट्ठा, खट्टा, कौड़ा सवाद।
- बन्दे नूं भुक्ख क्यो लग्गदी है? खान तों बाद जेहड़ी त्रिपती हुन्दी है उहदा की मतलब?
- संजोग विजोग दी कहानी दस्सो?
- असी सुणिऐ तुसी सिफत सलाह दी गल्ल करदे हो इह क्यों?
- प्रमेशर नेड़े किवे है ते दूर किवे?
- उझ्झड़ की है? राह की है?
- वेद उतम कि नाद उतम?

गुरू साहब ने फिर समझाउना शुरू कीता कि सारे ब्रेहमंड दा मालक इक निरंकार है। ओसे ने दुनिया ते कुदरती दी खेड़ रचायी होयी है। इह इक तरां नाल नाटक है, ड्रामा है। मरदाने नूं इशारा कीता ते बेले विच्च रबाब गूंज उठी। गुरू साहब ते मरदाने ने सलोक गाव्या तां सारी संगत नाल हो तुरी:-

राती रुती थिती वार ॥ पवन पानी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥ तिसु विचि जिय जुगति के रंग ॥ तिन के नाम अनेक अनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवानु ॥ नदरी करमि पवै नीसानु ॥ कच पकायी ओथै पाय ॥ नानक गया जापै जाय ॥

सो इह धरती थड़ा (सटेज) है ते जीव जंतू सभ ऐकटरां दी न्यायी हन। इह पाणी, इह पौन, अग्ग सभ उसे नाटक दे साधन हन जित्थे जिय नूं खिडायआ जा रेहा है।

इसे ड्रामे विचों ही फिर अकाल पुरख कुझ इक हीरो (सूरमे) पैदा करदा है। इह ड्रामा जां खेल वक्ख वक्ख पड़ावां जां खंडां रांही गुजरदा है।

करम खंड की बानी जोरु ॥ तिथै होरु न कोयी होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन मह रामु रहआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महमा माह ॥ ता के रूप न कथने जाह ॥ ना ओह मरह न ठागे जाह ॥ जिन कै रामु वसै मन माह ॥ तिथै भगत वसह के लोय ॥ करह अनन्दु सचा मनि सोइ ॥ सच खंडि वसै निरंकारु ॥ करि करि वेखै नदरि नेहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोय लोय आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥

गुरू साहब व्याख्या कर ही रहे सन कि जिवे माड़ा जेहा विशराम आया तां मरदाने ने बिलावल दी धुन्न छेड़ दित्ती। उनूं पता सी कि दक्खन दी उदासी मौके वी इक वेरां महातमा लोकां ने अजेहे सवाल पुच्छे सन तां गुरू साहब ने थितियां दे अधार ते बानी रची सी। इशारे नाल मरदाने ने गुरू साहब नूं याद दिवा दित्ता।

एकम एकंकारु निराला ॥ अमरु अजोनी जाति न जाला ॥ .....

आपे सचु किया कर जोड़ि ॥ अंडज फोड़ि जोड़ि विछोड़ि ॥ धरति अकासु कीए बैसन कउ थाउ ॥ राति दिनंतु कीए भउ भाउ ॥ जिनि कीए करि वेखणहारा ॥ अवरु न दूजा सिरजणहारा ॥3॥ त्रितिया ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ देवी देव उपाए वेसा ॥ जोती जाती गनत न आवै ॥ जिनि साजी सो कीमति पावै ॥ कीमति पाय रहआ भरपूरि ॥ किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥4॥ चउथि उपाए चारे बेदा ॥ खानी चारे बानी भेदा ॥ असट दसा खटु तीनि उपाए ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ तीनि समावै चउथै वासा ॥ प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥5॥

(पूरा शबद गुरू ग्रंथ साहब दे अंग 839 ते)

खाणियां दी कहानी - खाणियां* भाव स्रिसटी दे सारे जिय करते दे ओसे नाटक दे हिस्सा है।

अग्ग - अग्ग वी हवा, पाणी, धरती आदि दी तरां ओसे महान नाटक दा जरिया है।

भै विचि अगनि कढै वेगारि॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥

निरंकार दे हुकम विच्च ही अग्ग उस महान नाटक विच्च वसीला बनी होयी है।

जीव - पाउन पानी अगनी तां साधन ने इस ड्रामे दे असल पातर जिय हन

बबै बाजी खेलन लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा ॥ जिय जंत सभ सारी कीते पासा ढालनि आपि लग्गा ॥

सुभावक इह सभ जिय जंत उस दे हुकम तहत ही आए नें:

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहआ जायी ॥ हुकमी होवनि जिय हुकमि मिलै वड्यायी ॥

इनां नूं रिजक वी आपे ही दे रेहा है:-

हाहै होरु न कोयी दाता जिय उपाय जिनि रिजकु दिया ॥ हरि नामु ध्यावहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा

हरि नामु लिया ॥

•वक्ख वक्ख किसमां दे जिय ते कोयी वी दूसरे नाल मेल नही खांदा

बलेहार जाईए उस निरंकार तों जिसने वन्नगी पैदा कीती है। तरां तरां दे जिय ते कोयी वी दूसरे वरगे नही। हर इक आपनी ही किसम दा। इहो तां उस दी खूबसूरती है। अरबां खरबां जिय हन पर कोयी वी दो आपस विच्च नही मिलदे। वन्नगी ही इस नाटक दा नियम है:-

जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा ॥ इकतु रूपि फिरह परछन्ना कोइ न किस ही जेहा ॥2॥ अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥ एकु पुरबु मै तेरा देख्या तू सभना माह रवंता ॥3॥

जिय जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिख्या वुड़ी कलाम ॥

तिसु विचि धरती थापि रक्खी धरम साल ॥ तिसु विचि जिय जुगति के रंग ॥

दुइ दीवे चउदह हटनाले ॥ जेते जिय तेते वणजारे ॥ खुल्े हट होआ वापारु ॥ जो पहुचै सो चलणहारु ॥

जेते जिय तेते वाटाऊ ॥ चीरी आई ढिल न काऊ ॥

मतलब इह कि वन्नगी करते दा नियम है।

सुआद -सुआद दी वी ऐन ओहो कहानी है जो काम वाशना दी है। करते ने काम वाशना पायी तां कि पैदावार लगातार हुन्दी है ते इह खेड जारी रहे। एसे तरां खाने दे सुआद दी गल्ल है कि जीव खाए ते उहनूं ताकत मिलदी रहे ते उह कारजशील रहे। दूसरे पासे कई मनुक्ख काम दे सुआद विच्च लग्ग जांदे हन ते जीवन बरबाद कर लैंदे हन। एसे तरां कुझ मनुक्ख भोजन नूं सुआद दे कारन खायी तुरे जांदे हन ते रोगां नाल ग्रसे जांदे हन।

फिर सुआद विच्च वी करते ने वन्नगी पायी है: मिट्ठा, खट्टा, कौड़ा सवाद। ऐन ओसे वन्नगी दे असूल तहत।

भोजन जिन्नी ऊरजा दिन्दा है जदों उह सरीर ग्रहन कर लैंदा है ते फिर सरीर होर भोजन दी इछा करदा है जिन्नू आपां भुक्ख कहन्ने हां। जे भुक्ख नां लग्गे, सरीर भोजन नही ग्रहन करेगा ते हौली हौली मुक्क जाएगा जां कह लओ मर जाएगा। सो जिवे बन्दा काम वाशना करके खिच्या चला आउदा है एसे तरां भुक्ख कारन भोजन वल खिच्या आउदा है।

अधिक सुआद रोग अधिकायी बिनु गुर सहजु न पायआ ॥

जेता मोहु परीति सुआद ॥ सभा कालख दागा दाग ॥

गुरमुखि राग सुआद अन त्यागे ॥ गुरमुखि इहु मनु भगती जागे ॥

संजोग विजोग-

गुरू साहब ने फिर वरनन शुरू कीता कि जीव संजोगी ही आपस विच्च मिलदे (टकराउदे) हन। मौजूद संगत ते साधूआं नूं दस्या कि मैं तुहाडे नाल गल्ल कर रेहा हां जां तुहाडे दरशन कर रेहा इह धुरों ही लिख्या होया सी। जीवां दा आपसी मेल पहलों तों ही तह हो जांदा है। जनम वेले ही। अज्ज दी भाशा विच्च आपां कह सकदे हां कि इह साडे डी. ऐन. ए विच्च ही आ जांदा है कि किसे दा संजोग किस नाल होणा।

ऐन इहो हालत विजोग भाव विछोड़े दी है। मतलब जुड़े होए जिय ने कदों विछड़ जाना है इह वी पहलो ही तह होया हुन्दा है:

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावह लेखे आवह भाग ॥

संजोगु विजोगु मैरै प्रभि कीए ॥ स्रिसटि उपाय दुखा सुख दीए ॥ दुख सुख ही ते भए निराले गुरमुखि सीलु सनाहा हे ॥

मनमुखु जानै आपने धिया पूत संजोगु ॥ नारी देखि विगासियह नाले हरखु सु सोगु ॥ गुरमुखि सबदि रंगावले अहनिसि हरि रसु भोगु ॥

कायआ हंसि संजोगु मेलि मिलायआ ॥ तिन ही किया विजोगु जिनि उपायआ ॥ मूरखु भोगे भोगु दुख सबायआ ॥ सुखहु उठे रोग पाप कमायआ ॥ हरखहु सोगु विजोगु उपाय खपायआ ॥ मूरख गनत गणाय झगड़ा पायआ ॥ सतिगुर हथि निबेड़ु झगड़ु चुकायआ ॥ करता करे सु होगु न चलै चलायओ ॥

साहा संजोगु वियाहु विजोगु ॥ सचु संतति कहु नानक जोगु ॥

सिफत सलाह जां नाम दा सिधांत - सिक्खी सिफत सलाह जां उसतत जां नाम दा धरम है। जिवे हिन्दूमत विच्च करम कांड जां बुद्धमत विच्च समाधी है। विसथार विच्च देखो सफा 310.

प्रमेशर नेड़े किवे है ते दूर किवे? -

निरंकार प्रमेशवर साडे तों इनां कु नेड़े है जिन्ने असी आपने आप दे वी नेड़े नही हां। शायद मच्छी दी मिसाल नाल सारी सथिती साफ हो जावेगी। मच्छी दे अन्दर वी पानी है। बाहर वी पानी है। पर मच्छी नूं पानी दी मौजूदगी दा अहसास नही हुन्दा जद तक्क उह पानी तों बाहर नही आ जांदी। साडी आपनी ही मिसाल लै लयो। साडे चुफेरे हवा है। अन्दर वी हवा है। पर सानूं इसदी मौजूदगी दा अहसास नही जिन्नां चिर साडा दम्म नां घुट्टे।

जदों तक्क मच्छी नूं पानी दी मौजूदगी दा अहसास रहन्दा है उस दे नेड़े है जदों उह भुल्ली हुन्दी है उदों दूर। एसे तरां इनसान जदों तक्क निरंकार दी होंद तों भुल्ल्या रहन्दा है प्रमेशर उस तों दूर है। जदों उहदी हाजरी दा उनूं अहसास रहे ओदों नेड़े है।

आपे नेड़ै नाही दूरे ॥ बूझह गुरमुखि से जन पूरे ॥

करमी आपो आपनी के नेड़ै के दूरि ॥

आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि म्यानु ॥

ਗਾਵੈ ਕੋ ਜਾਪੈ ਦਿਸੈ ਦੂਰਿ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਵੇਖੈ ਹਾਦਰਾ ਹਦੂਰਿ ॥

ਤੂ ਭਰਪੂਰਿ ਜਾਨ੍ਯਾ ਮੈ ਦੂਰਿ ॥ ਜੋ ਕਛੁ ਕਰੀ ਸੁ ਤੇਰੈ ਹਦੂਰਿ ॥ ਤੂ ਦੇਖਹ ਹਉ ਮੁਕਰਿ ਪਾਉ ॥ ਤੇਰੈ ਕੰਮਿ ਨ ਤੇਰੈ ਨਾਯ ॥

ਜਲ ਮਹ ਉਪਜੈ ਜਲ ਤੇ ਦੂਰਿ ॥ ਜਲ ਮਹ ਜੋਤਿ ਰਹਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਕਿਸੁ ਨੇੜੈ ਕਿਸੁ ਆਖਾ ਦੂਰਿ ॥ ਨਿਧਿ ਗੁਨ ਗਾਵਾ ਦੇਖਿ ਹਦੂਰਿ ॥

ਸਾਚਉ ਦੂਰਿ ਨ ਜਾਣੀਐ ਅੰਤਰਿ ਹੈ ਸੋਯੀ ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਵਿ ਰਹੇ ਕਿਨਿ ਕੀਮਤਿ ਹੋਯੀ ॥

ਤੂੰ ਨਾਹੀ ਪ੍ਰਭ ਦੂਰਿ ਜਾਨਹ ਸਭ ਤੂ ਹੈ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਖਿ ਹਦੂਰਿ ਅੰਤਰਿ ਭੀ ਤੂ ਹੈ ॥

ਆਪੇ ਨੇੜੈ ਆਪੇ ਦੂਰਿ ॥ ਆਪੇ ਸਰਬ ਰਹਆ ਭਰਪੂਰਿ ॥ ਸਤਗੁਰੁ ਮਿਲੈ ਅੰਧੇਰਾ ਜਾਯ॥ ਜਹ ਦੇਖਾ ਤਹ ਰਹਆ ਸਮਾਯ ॥

ਦੂਰਿ ਨਾਹੀ ਮੇਰੋ ਪ੍ਰਭੁ ਪ੍ਯਾਰਾ ॥ ਸਤਿਗੁਰ ਬਚਨਿ ਮੇਰੋ ਮਨੁ ਮਾਨ੍ਯਾ ਹਰਿ ਪਾਏ ਪ੍ਰਾਨ ਅਧਾਰਾ ॥

ਉਝੜ ਕੀ ਹੈ? ਰਾਹ ਕੀ ਹੈ?

ਹਨ੍ਦੂ ਧਾਰਮਿਕ ਸਿਧਾਂਤ ਅਨੁਸਾਰ ਰਾਹ ਤੋਂ ਭਟਕ ਜਾਨਾ (ਉਝੜ) ਤੇ ਰਾਹੇ ਪੈਨਾ ਵੀ ਧੁਰੋਂ ਲਿਖੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੀ ਹੈ।

ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਿਫਤਿ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਲਾਹ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਉਝੜ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰਾਹ ॥

ਭਾਨੈ ਉਝੜ ਭਾਨੈ ਰਾਹਾ ॥ ਭਾਨੈ ਹਰਿ ਗੁਨ ਗੁਰਮੁਖਿ ਗਾਵਾਹਾ ॥ (ਮਹਲਾ 5)

- ### ਵੇਦ ਉੱਤਮ ਕਿ ਨਾਦ ਉੱਤਮ?

ਸਿਕ੍ਖਮਤ ਅਨੁਸਾਰ ਵੇਦ ਭਾਵ ਗ੍ਯਾਨ ਤੇ ਨਾਦ ਭਾਵ ਸੰਗੀਤ ਦੋਵੇ ਸਿਧਾਂਤ ਨਾਮ ਵਿਚ ਆ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਫਿਰ ਗੁਰਬਾਨੀ ਹੀ ਨਾਮ ਹੈ। ਸਾਹਬ ਨੇ ਫਰਮਾਯਆ:

ਸਭਿ ਨਾਦ ਬੇਦ ਗੁਰਬਾਨੀ ॥ ਮਨੁ ਰਾਤਾ ਸਾਰਿਗਪਾਨੀ ॥ ਤਹ ਤੀਰਥ ਵਰਤ ਤਪ ਸਾਰੇ ॥ ਗੁਰ ਮਿਲ੍ਯਾ ਹਰਿ ਨਿਸਤਾਰੇ ॥

ਜੋ ਜੋ ਸਾਧੂਆਂ ਨੇ ਸਵਾਲ ਕੀਤੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਉਨਾਂ ਵਿਸਮਾਦ ਵਿਚ ਲੈ ਆਂਦਾ ਭਾਵ ਹੈਰਾਨੀ ਵਾਲਾ ਨਿਰੰਕਾਰ ਪ੍ਰਤੀ ਵੈਰਾਗ। ਨਿਰੰਕਾਰ ਦੀ ਅਦਭੁਤ ਰਚਨਾ ਵਲ ਧ੍ਯਾਨ ਮਾਰ ਕੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਵਿਸਮਾਦਿਤ ਹੋਯੀ ਜਾ ਰਹੇ ਸਨ। ਫਿਰ ਸਾਹਬ ਨੇ ਸ਼ਬਦ ਗਾਯਆ ਜਿਸ ਤੇ ਮਰਦਾਨੇ ਤੇ ਸਾਰੀ ਸੰਗਤ ਨੇ ਸਾਥ ਦਿਤ੍ਤਾ। ਰਾਵੀ ਦਾ ਬੇਲਾ ਗੂੰਜ ਉਠ੍ਯਾ:-

ਸਲੋਕ ਮ 1 ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਨਾਦ ਵਿਸਮਾਦੁ ਵੇਦ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਜਿਯ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੇਦ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰੂਪ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰੰਗ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਨਾਗੇ ਫਿਰਹ ਜੰਤ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਪਉਨੁ ਵਿਸਮਾਦੁ ਪਾਨੀ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਅਗਨੀ ਖੇਡਹ ਵਿਡਾਨੀ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਧਰਤੀ ਵਿਸਮਾਦੁ ਖਾਨੀ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਦਿ ਲਗਹ ਪਰਾਨੀ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸੰਜੋਗੁ ਵਿਸਮਾਦੁ ਵਿਜੋਗੁ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੁਖ ਵਿਸਮਾਦੁ ਭੋਗੁ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਿਫਤਿ ਵਿਸਮਾਦੁ ਸਾਲਾਹ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਉਝੜ ਵਿਸਮਾਦੁ ਰਾਹ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਨੇੜੈ ਵਿਸਮਾਦੁ ਦੂਰਿ ॥ ਵਿਸਮਾਦੁ ਦੇਖੈ ਹਾਜਰਾ ਹਜੂਰਿ ॥ ਵੇਖਿ ਵਿਡਾਨੁ ਰਹਆ ਵਿਸਮਾਦੁ ॥ ਨਾਨਕ ਬੁਝਨੁ ਪੂਰੈ ਭਾਗਿ ॥

ਸਭ ਸਾਧੂ ਲੋਕ ਪੁਕਾਰ ਉਠੇ।ਧਨ੍ਨ ਨਾਨਕ। ਧਨ੍ਨ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ। ਜੈਸਾ ਸੁਣਿਐ ਵੈਸਾ ਪਾਯਆ।

—◈—

ਕਵੀ ਨੂੰ ਉਪਦੇਸ਼-

ਉਹਦੀ ਕਵਿਤਾ ਹੌਲੀ, ਜੇਹਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਭੈ ਨਹੀ

ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਇਕ ਕਵੀ ਇਕ ਵੇਰਾਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦੇ ਦਰਬਾਰ ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਆ ਗ੍ਯਾ। ਉਸਨੂੰ ਆਪਨੀ ਕਵਿਤਾ ਤੇ ਬੜਾ ਮਾਨ ਸੀ। ਪਰ ਉਹ ਸਮਝਦਾ ਸੀ ਕਿ ਉਹਦੀ ਕਵਿਤਾ ਲੋਕਾਂ ਵਿਚ੍ਚ ਪਤਾ ਨਹੀ ਕ੍ਯੋ ਪ੍ਰਵਾਨ ਨਹੀ ਹੋ ਰਹੀ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਕਵੀ ਨੂੰ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿਤ੍ਤਾ ਕਿ ਤੇਰੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚੋਂ ਹੰਕਾਰ ਦੀ ਬਦਬੂ ਆਉਦੀ ਹੈ। ਜੇ ਰਬ੍ਬ ਦੇ ਭਾਨੇ ਵਿਚ੍ਚ ਰਹ ਕੇ ਕਵਿਤਾ ਕਹੇਗਾ ਤਾਂ ਉਹ ਮਕਬੂਲ ਹੋਵੇਗੀ। ਵਧਿਯਾ ਕਵਿਤਾ ਸ੍ਯਾਪਨ ਨਾਲ ਨਹੀ ਉਪਜਦੀ। ਜੇ ਬਨ੍ਦਾ ਰਬ੍ਬ ਦੀ ਭੈ ਭਾਵਨੀ ਵਿਚ੍ਚ ਚਲੇ ਤਾਂ ਇਹ ਆਪਨੇ ਆਪ ਫੁਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਅਜੇਹੀ ਕਵਿਤਾ ਹੁਨ੍ਦੀ ਵੀ ਵਜਨਦਾਰ। ਹੰਕਾਰੀ ਬਨ੍ਦੇ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਹੌਲੀ ਹੁਨ੍ਦੀ ਹੈ।

ਤੇ ਅਗਲੀ ਗਲ੍ਲ ਜੇ ਮਨ ਵਿਚ੍ਚ ਰਬ੍ਬ ਦਾ ਭੈਯ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਦੁਨ੍ਯਾਵੀ ਡਰ ਆਪਨੇ ਆਪ ਸਡ੍ਹ ਬਲ ਜਾਂਦੇ ਨੇ। ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਗੁਆਰੇਰੀ ਦੀ ਗਉੜੀ ਵਿਚ੍ਚ ਚਉਪਦਾ ਕੇਹਾ:-

ਭਉ ਮੁਚੁ ਭਾਰਾ ਵਡਾ ਤੋਲੁ ॥ ਮਨ ਮਤਿ ਹਉਲੀ ਬੋਲੇ ਬੋਲੁ ॥ ਸਿਰਿ ਧਰਿ ਚਲੀਐ ਸਹੀਐ ਭਾਰੁ ॥ ਨਦਰੀ ਕਰਮੀ ਗੁਰ ਬੀਚਾਰੁ ॥1॥ ਭੈ ਬਿਨੁ ਕੋਇ ਨ ਲੰਘਸਿ ਪਾਰਿ ॥ ਭੈ ਭਉ ਰਾਖ੍ਯਾ ਭਾਯ ਸਵਾਰਿ ॥1॥ ਰਹਾਉ ॥ ਭੈ ਤਨਿ ਅਗਨਿ ਭਖੈ ਭੈ ਨਾਲਿ ॥ ਭੈ ਭਉ ਘੜੀਐ ਸਬਦਿ ਸਵਾਰਿ ॥ ਭੈ ਬਿਨੁ ਘਾੜਤ ਕਚੁ ਨਿਕਚ ॥ ਅੰਧਾ ਸਚਾ ਅੰਧੀ ਸਟ ॥2॥ ਬੁਧੀ ਬਾਜੀ ਉਪਜੈ ਚਾਉ ॥ ਸਹਸ ਸ੍ਯਾਨਪ ਪਵੈ ਨ ਤਾਉ ॥ ਨਾਨਕ ਮਨਮੁਖਿ ਬੋਲਨੁ ਵਾਉ ॥ ਅੰਧਾ ਅਖਰੁ ਵਾਉ ਦੁਆਉ ॥3॥1॥

—◈—

ਮਾਤਾ ਕਹਨ ਲਗ੍ਗੀ ਪੁਤ੍ਤਰਾ! ਆਪਨੀ ਘਰਵਾਲੀ ਦਾ ਵੀ ਕਦੀ ਖ੍ਯਾਲ ਕਰ੍ਯਾ ਕਰ!

ਕਰਤਾਰਪੁਰ ਦੀ ਗਲ੍ਲ ਹੈ ਇਕ ਦਿਨ ਮਾਤਾ ਤ੍ਰਿਪਤਾ ਨੂੰ ਆਪਨੀ ਨੂੰਹ (ਮਾਤਾ ਘੁੰਮੀ) ਤੇ ਤਰਸ ਆਯਾ ਤੇ ਕਹਨ ਲਗ੍ਗੀ ਪੁਤ੍ਤਰ ਨਾਨਕਾ ਕਦੀ ਆਪਨੀ ਘਰਦੀ ਦਾ ਵੀ ਖ੍ਯਾਲ ਕਰ੍ਯਾ ਕਰ ਜਿਸ ਨੇ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਤੇਰੇ ਲੇਖੇ ਲਾ ਦਿਤ੍ਤੀ। ਸਾਡਾ ਖ੍ਯਾਲ ਤੇ ਤੂੰ ਕੀ ਕਰਨਾਂ ਭਲਾ। ਮਾਤਾ ਦਾ ਅਸਲ ਮਕਸਦ ਤਾਂ ਸੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਯਾਦ ਦਿਵਾਉਨਾ ਕਿ ਤੇਰੇ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਵੀ ਹੈਗੇ ਨੇ ਕਦੀ ਉਨਾਂ ਵਲ ਵੀ ਧ੍ਯਾਨ ਕਰ ਲ੍ਯਾ ਕਰ।

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਮਾਤਾ ਨੂੰ ਕੇਹਾ ਨਹੀ ਮਾਤਾ ਮੈਂ ਸਾਰ੍ਯਾ ਦਾ ਖ੍ਯਾਲ ਕਰਦਾ ਹਾਂ। ਮੇਰੇ ਵਾਸਤੇ ਸਾਰੇ ਬਰਾਬਰ ਹਨ। ਮੈਨੂੰ ਮੋਹ ਜਕਡ੍ਹ ਨਹੀ ਸਕਦਾ।

ਮਾਤਾ ਕਹਨ ਲਗ੍ਗੀ ਜੇ ਫਿਰ ਇਹ ਸਾਰੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਝੂਠੇ ਨੇ ਤਾਂ ਸਚ੍ਚੇ ਕੇਹਡ਼ੇ ਨੇ?

ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਜਵਾਬ ਦਿਤ੍ਤਾ ਕਿ ਬਨ੍ਦਾ ਉਚ੍ਚੀ ਮਤਿ ਲ ਆਪਨੀ ਮਾਂ ਬਨਾ ਲਏ ਸੰਤੋਖ ਲ ਆਪਨਾ ਪ੍ਯੁ ਬਣਾਏ, ਖ਼ਲਕਤ ਦੀ ਸੇਵਾ ਲ ਉਚ੍ਚੇਚਾ ਭਰਾ ਬਣਾਏ। ਉਦ੍ਦਮ ਅਤੇ ਉਚ੍ਚੀ ਸੁਰਤਿ ਇਹ ਦੋਵੇਂ ਉਸ ਬਨ੍ਦੇ ਦੇ ਸਸ੍ਸ ਸੁਹਰਾ ਬਣਨ; ਸੁਚਜ੍ਜੀ ਜ਼ਿਨ੍ਦਗੀ ਲ ਇਸਤ੍ਰੀ ਬਨਾ ਲਏ ।

ਸਤ ਸੰਗ (ਵਿਚ ਜਾਣਾ) ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਲ ਵ੍ਯਾਹ ਦਾ ਸਾਹਾ ਸੋਧ੍ਯਾ ਜਾਏ (ਭਾਵ, ਜਿਵੇਂ ਵ੍ਯਾਹ ਵਾਸਤੇ ਸੋਧ੍ਯਾ ਹੋਯਾ ਸਾਹਾ ਟਾਲ੍ਯਾ

नहीं जा सकदा, तिवें सत संग विचों कदे न खुंझे), सत संग विच्च रह के दुनिया नालों निरमोहता-रूप (प्रभू नाल) व्याह हो जाए; तां (इस व्याह विचों) सच्च (भाव, प्रभू दा सदा हिरदे विच्च टिके रहणा, उस जीव-इसत्री दी) संतान है ।

माता इह हन सच्चे रिशते। गुरू साहब ने गउड़ी विच्च बानी कही:-

माता मति पिता संतोखु ॥ सतु भायी करि एहु विसेखु ॥1॥ कहना है किछु कहनु न जाय ॥ तउ कुदरति कीमति नही पाय ॥1॥ रहाउ ॥ सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥ करनी कामनि करि मन लए ॥2॥ साहा संजोगु वियाहु विजोगु ॥ सचु संतति कहु नानक जोगु ॥

—◈—

बाबा जी दस्सो की करीए कि रब्ब दे दर दे दरशन हो जान

पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेह ॥

करतारपुर दी गल्ल है इक शामी सिक्ख जदों खेती कार वेहार सेवा तों परते तां गुरू साहब अग्गे अरजोयी कीती कि बाबा जी सानूं वी कोयी अजेहा गुर द्यो कि सानूं वी निरंकार दा महल नजर आवे।

गुरू साहब ने उपदेश कीता कि अकाल पुरख दा नाम जपना ही उहदा मारग है।

सिक्खां फिर सवाल कीता कि केहड़ा वेला बेहत्र है उहदा नाम जप्पन लई। गुरू साहब ने केहा कि सदा ही उहदा नाम जपना लाभकारी है पर अंमृत वेले दा जाप ज्यादा सहायी हुन्दा है। रात दे पिच्छले पहर उठ के जेहड़ा बन्दा उहदा नाम ध्याउदा है उनूं निरंकार दा महल नजर आउना शुरू हो जांदा है। गुरू साहब ने शबद रच्या:

सलोकु ॥ साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ नानक सरनि तुहारिया पेखउ सदा हजूरि ॥1॥ सबद ॥॥ पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेह ॥ खेमे छत्र सरायचे दिसनि रथ पीड़े ॥ जिनी तेरा नामु ध्याया तिन कउ सदि मिले ॥1॥ बाबा मै करमहीन कूड़्यार ॥ नामु न पायआ तेरा अंधा भरमि भूला मनु मेरा ॥1॥ रहाउ ॥ साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माय ॥ सुख थोड़े दुख अगले दूखे दूखि वेहाय ॥2॥ विछुड़्या का क्या वीछुड़ै मिल्या का क्या मेलु ॥ साहबु सो सालाहीऐ जिनि करि देख्या खेलु ॥3॥ संजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी संजोग ॥

—◈—

साहब मेरा नीत नवा

धरमसाल पक्खोके दी गल्ल है। इक वेरां जदों गुरू नानक पातशाह भोजन छक रहे सन तां माता सुलक्खनी (घुंमी) साहब नूं ताहना देन लग्ग पए। कहन लग्गी वे बाबा तूं रोज नवी सो नवी कवीशरी करदै इहदे नाल तेरे सति करतार नूं की फायदा। भई रब्ब दा नां लैना असी राम राम कहने आ तुसी सति करतार कह लयो। तुसी केहा पत्थर ना पूज्या करो। असी उह वी छड्ड दित्ते। असी वरत रक्खने वी छड्ड दित्ते। पर तूं तां हर रोज नवी ही कवीशरी (बाणी) दई जा रेहा है।

गुरू साहब ने आपनी पतनी नूं फरमायआ वेख घुंमीए आह पासे वेख किद्दा सोहना फुल खिड़्या ए इक कल्ह नही सी। तूं अज्ज गोंगलूआं दी सबजी बणायी ए कल्ह तां दाल सी। भोलीए उह मालक रोज नवे सो नवा हुन्दा है। नवियां ही उहदियां दातां हुन्दियां हन। हर रोज नवी सो नवी। उह कदी पुराना नही हुन्दा। हर वेले तरो ताज़ा।

निरंकार दातार प्रभू दियां दातां लैन वाले असी पुराने हो जांदे हां उहदियां दातां रोज नवियां सो नवियां हुन्दियां हन। तूं वेखदी नही अज्ज इह सरों दे बसंती फुल्ल। इह ताजे ने। आह जेहड़ी खुशबू आ रही ए इह अज्ज दी ताजा है। साउन दे महीने वक्खरी खुशबू हुन्दी है। हाड़ जेठ वक्खरे हुन्दे ने। हर दिन नवां हुन्दा है। मतलब हर दिन दियां दातां नवियां हुन्दियां हन। घुंमीए मेरा मालक हर रोज नवे सो नवां। मैं पुराना हो गया वां। मैं तां बस उहदे गुन गाउदा रहन्ना वां जिन्ने मेरे दुक्ख दलिद्र कट्ट दित्ते ने।

साहब ने माता ते वी बखशश कीती ते उहदे वी बन्द पए किवाड़ खुल्ल गए। उह वी गुरू साहब दे नाल ही गाउन लग्ग पई:-

धनासरी महला 1 घरु 1 चउपदे ॥ जीउ ड्रतु है आपना कै स्यु करी पुकार ॥ दूख विसारनु सेव्या सदा सदा दातारु ॥1॥ साहबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥1॥ रहाउ ॥ अनदिनु साहबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ सुनि सुनि मेरी कामनी पारि उतारा होइ ॥2॥ दयाल तेरै नामि तरा ॥ सद कुरबानै जाउ ॥1॥ रहाउ ॥ सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥3॥ तुधु बाझु प्यारे केव रहा ॥ सा वड्यायी देह जितु नामि तेरै लागि रहां ॥ दूजा नाही कोइ जिसु आगै प्यारे जाय कहा ॥1॥ रहाउ ॥ सेवी साहबु आपना अवरु न जाचंउ कोइ ॥ नानकु ता का दासु है बिन्द बिन्द चुख चुख होइ ॥4॥ साहब तेरे नाम विटहु बिन्द बिन्द चुख चुख होइ ॥1॥ रहाउ ॥4॥1॥

इह शबद फिर रोज रोज दीवान विच्च वी गायआ जान लग्गा। माता सुलक्खनी बीबियां नाल रल के इह शबद गायआ करदी सी। सारी संगत ने झूम उठणा।

—◈—

दाअदा कालू बोल्या, 'जो आउदा सभ उजाड़ी जानै, दो पैसे कंम धंधे विच्च वी ला'्य

करतारपुर दी गल्ल है। इक दिन महता कालू मंजे ते बैठा सी। लागों दी गुरू नानक निकले। पिता ने सद्द के कोल बैठा ल्या। पिता कहन लग्गा "नानका मेरी गल्ल पहलां ध्यान नाल सुनी फिर जवाब दई।"

पिता बोल्या:

"वेख अज्ज तेरा वकत है। इह हमेशां इको जेहा नही रहन्दा। अज्ज किन्ना कुझ आ रेहा है। पर मैं हैरान हां तूं सभ कुझ उजाड़ी जा रेहै।पैसा इक वी नही जोड़ रेहा। इस जिन्दगी दा की पता। कल्ह नूं तेरे पुत्त पोतरे की करनगे? स्याने कहन्दे 'बपारे बसते लखमी'। किसे कंम धन्दे विच्च दो पैसे लावांगे तां ही बरकत पैंदी है।

पिता दियां गल्लां सुन के गुरू साहब थोड़ा सखत हो गए। कहन लग्गे, "अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥" पिता जी क्यो नही तुसी आपने जीवन बारे विचार करदे? क्यो नही अग्गे दा ख्याल करदे? केहो जेही गल्ल कह रहे हो? इह संगत दा पैसा है। संगत विच्च ही खरच्या जाएगा। तुहाडे पोतरे पड़पोतरे आपनी किसमत लिखा के आउणगे। उनां नूं वी कोयी तोट नही आएगी।**

दाअदा* जी तुसी भविख दा सोच रहे हो। आपां नूं तां इस गल्ल दा पता ही नही कि अगला साह आउना कि नही आउणा। आपने पैदा कीते जीवां दी प्रितपालना अकाल पुरख आप करदा। ऐहो जेहियां गल्लां नही करीदियां। अगले दीवान विच गुरू साहब ने मरदाने दी रबाब ते शबद गायआ:-

धनासरी महला 1 ॥ हम आदमी हां इक दमी मुहलति मुहतु न जाना ॥ नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जिय पराना ॥1॥ अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥1॥ रहाउ ॥ सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा प्यारा ॥ नानकु सायरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥2॥ जे तू किसै न देही मेरे साहबा क्या को कढै गहना ॥ नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहना ॥3॥ नामु खसम का चिति न किया कपटी कपटु कमाना ॥ जम दुआरि जा पकड़ि चलायआ ता चलदा पछुताना ॥4॥ जब लगु दुनिया रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ भालि रहे हम रहनु न पायआ जीवत्या मरि रहीऐ ॥

गुरू साहब दा उपदेस सुन के दाअदा कालू पसचाताप अते वैराग विच्च आ ग्या। 'कि मेरा की बणेगा। मैं हमेशां मायआ मोह विच्च ही फस्या रेहा हां। मैं तां नरकां नूं जावांगा"

गुरू साहब ने दिलासा दित्ता, "नही दाअदा तूं वी मुकत हैं।"

पिता कहन लग्गा ओए पुत्तरा मै जिन्दगी च कोयी पुन्न नही कीता मैं किवे मुकत हो ग्या?

गुरू साहब ने केहा वेखो दाअदा इह तुहाड़ी बदौलत ही मैं थोड़ी बहुत भगती करन दे समरथ होया हां। मेरी जिंमेवारी तुसी संभालदे आए हो। मैं तुहाडे लई वी निरंकार अग्गे अरदास करदा हां। सरबत दा भला मंगदा हां। हुन वायदा करो कि जिन्ने सवास हैगे ने हर वेले उस निरंकार नूं याद करोगे। मायआ मोह त्यागोगे। दाअदे दे दिमाग दे बन्द पए दरवाजे हुन खुल्ल गए सन ते सदा सतिकरतार सति करतार दा जाप करन लग्गा।

फिर इक दिन गुरू साहब ने पिता नूं दिलासा दित्ता कि तुसी वी मुकत हो।

—◈—

माता कहन लग्गी "वे मेरा नहीयो सिमरन विच्च मन्न लग्गदा"

जदों मापे करतारपुर विच्च रह रहे सन तां उह दोवे जिय गुरू साहब दे दीवान दी हाजरी बड़े ध्यान पूरबक भरदे सन। पिता कालू ने तां हौली हौली सिमरन शुरू कर दित्ता सी पर माता ज्यादा दुन्यावी गल्लां विच्च रुझ्झी रहन्दी सी। इक वेरां फिर किसे गुरसिक्ख ने ही माता नूं सतिकार सहत केहा कि माता जी तुसी वी सिमरन वल ध्यान द्या करो। माता कहन लग्गी वे मेरा मन्न नही लग्गदा सिमरन वगैरा 'च।

फिर इक दिन जदों मंजी ते पै गई तां पुत्तर ळ कहन लग्गी कि नानक मेरा नहीयो ध्यान लग्गदा सिमरन विच। दस्स मैं की करां? गुरू साहब कहन लग्गे माता जी मन्न नूं बदो बदी बन्न के सिमर्या नही जा सकदा। जे सच्चमुच्च सिमरनां चाहुन्दे हो तां सच्च नूं पछान लवो। हर थां हर शैय उस निरंकार दा रूप है। उस रूप विचों निरंकार नूं लभ्भो। झूठ तों किनारा करो। हुन की पता किसे वेले वी बुलावा आ जाए।

पैड मग

करतारपुर (सन्न 2004)

सोढी 2- 417 ने इह सबद भायी लहने प्रथाय कहे जाना दस्स्या है, हालां कि सम्बोधन साफ तौर ते माता नूं है। फिर खुद सोढी 2- 205 ने मन्या है इस सबद तों पहलां वाला पिता कालू नूं सम्बोधन कीता है। सो नाल लग्गदा शबद माता प्रथाय ही है।

सोढी 2- 160, व इह वी सोढी:2 अनुसार ही है।

*व चारे खाणियां- हिन्दूमत अनुसार सारी स्रिसटी दे जीवां नूं चार श्रेणियां विच्च वंड्या जा सकदा है उनां दे पैदा होन दे अधार ते जिवे:-

1. अंडज - जेहड़े अंडे तों पैदा हुन्दे हन जिवें पंछी, किरले, मच्छियां आदि।
2. जेरज - जेर रांही पैदा होन वाले। भाव जेहड़े सिद्धे मां दे गरभ विचों आउदे हन । जिवे मैंमलज ((Mammals like man, monkey, buffalo, horse, dog, mouse)
3. सेतज- जेहड़े गन्दगी विच्च पैदा हुन्दे हन। जिवे बैकटीरिया जूआं जां होर पैरासाईटज़
4. उतभुज- जेहड़े बीज तों धरती विच्च पैदा हुन्दे हन। वेल बूटे आदि

जपुजी दे सलोक दे आउन तों लगदा है कि इह साखी भायी लहना मिलाप तों बाद दी है। सोढी 2-184

सोढी 2-189, सोढी 2- 198, सोढी 2- 414 ने इह शबद गुरू अंगद देव दे प्रथाय कहना दस्स्या है जदों कि साफ तौर ते सम्बोधन कामिनी नूं है। फिर सोढी ने मन्या है कि इस तों अगला शबद पिता कालू दे प्रथाय है।

य सोढी 2- 205, * माझे दे इलाके विच्च कुझ लोक बजुरगां नूं दाअदा (दादा नहीं) कह के सम्बोधन करदे सन। असी आपने पिंड दे अखौती कंमी बजुरगां नूं दाअदा कहके सम्बोधन कर्या करदे सां। वकत वकत नाल सम्बोधन बदलदे रहन्दे ने। लग्गदै गुरू नानक साहब वी पिता नूं दाअदा ही केहा करदे सन। दाअदा लफज़ महाराशटर ते मद्ध प्रदेस कुझ इलाक्या विच वड्डे भरा लई वी वरत्या जांदा है। किते इह दबंग बन्दे लई वरत्या जांदा है। दादागिरी

** इह गुरू नानक दे अशीरवाद दी ही बरकत है कि जित्थे किते बेदी हैन उह चंगी मायक हालत विच्च हन। कुझ वी होवे सिक्ख बेदी तुहानूं भुक्खा मरदा नज़र नही आएगा। की इह वी चमतकार नही? सोढी 2- 189

साहब ने धनासरी विच्च शबद केहा *:-

धनासरी महला 1 घरु दूजा आं सतिगुर प्रसादि ॥ क्यु सिमरी सिवर्या नही जाय ॥ तपै ह्याउ जियड़ा बिललाय ॥ सिरजि सवारे साचा सोइ ॥ तिसु विसरिऐ चंगा क्यु होइ ॥1॥ हिकमति हुकमि न पायआ जाय ॥ क्यु करि साचि मिलउ मेरी माय ॥1॥ रहाउ ॥ वखरु नामु देखन कोयी जाय ॥ ना को चाखै ना को खाय ॥ लोकि पतीनै ना पति होइ ॥ ता पति रहै राखै जा सोइ ॥2॥ जह देखा तह रहआ समाय ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाय ॥ जे को करे कीतै क्या होइ ॥ जिस नो बखसे साचा सोइ ॥3॥ हुनि उठि चलना मुहति कि तालि ॥ क्या मुहु देसा गुन नही नालि ॥ जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥ विनु नदरी नानक नही कोइ ॥4॥1॥3॥

गुरू साहब ने माता जी अकाल पुरख दी बखशश होवे तां ही उनूं ध्याया जा सकदा है। इस करके सिमरन लई वी उहदे अग्गे अरदास कर्या करो। सच्चे सतिगुर दा ध्यान करो उहदे ते ध्यान वी सिमरन विच्च सहायी हो सकदा है। बाकी माता तेरा तां की सारा प्रवार ही इस 84 दे गेड़ तों मुकत रहेगा। तेरे पुत्तर नूहां पोतरे पोतरियां वी। बस उस अग्गे इहो अरदास कर्या कर के इह जिय प्रान ओसे दे हन जिस ने दित्ते हन।

गुरू साहब ने माता दे प्रथाय शबद केहा:-

धनासरी महला 1 ॥ नदरि करे ता सिमर्या जाय ॥ आतमा द्रवै रहै लिव लाय ॥ आतमा परातमा एको करै ॥ अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥1॥ गुर परसादी पायआ जाय ॥ हरि स्यु चितु लागै फिरि कालु न खाय ॥1॥ रहाउ ॥ सचि सिमरिऐ होवै परगासु ॥ ता ते बिख्या मह रहै उदासु ॥ सतिगुर की ऐसी वड्यायी ॥ पुत्र कलत्र विचे गति पायी ॥2॥ ऐसी सेवकु सेवा करै ॥ जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥ साहब भावै सो परवानु ॥ सो सेवकु दरगह पावै मानु ॥3॥ सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए ॥ जो इछै सोयी फलु पाए ॥ साचा साहबु किरपा करै ॥ सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥4॥ मनति नानकु करे वीचारु ॥ साची बानी स्यु धरे प्यारु ॥ ता को पावै मोख दुआरु ॥ जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥5॥

छेती ही फिर कुझ दिनां विच्च माता त्रिपता करतारपुर विखे चलाना कर गए

—◈—

रब्ब दे राह ते भेख धारन करनां फजूल है इक वैशनव नाल

एसे तरां इक दिन इक वैशनो साधू करतारपुर आ ग्या। उसने गुरू नानक दी खूब उपमा सुनी सी। उनूं इह सुन के गुस्सा आ रेहा सी कि इह किवे हो सकदा है कि कोयी ग्रिसती बन्दा रूहानियत जां धरम बारे लोकां नूं रोशनी देवे। इक दिन उह हौसला करके गुरू साहब कोल पहुंच ही ग्या।

सेवादारां नूं कहन लग्गा मैनूं आपने गुरू नाल मिलायो।

उनां केहा जी ठीक है पहलां तुसी कुझ जल-पानी छको। अराम करो। तरो ताजे हो जायो। दूरो आए हो।

गुरू साहब नाल जदों मेल होया तां साहब ने साधू नूं लेट के डंडाउत बन्दनां कीती। सुख सांद पुच्छन तों बाद गुरू साहब ने केहा कि मेरे धन्न भाग किसे रब्बी रूह दे दरशन होए ने। साधू ने जदों खुद्द दी उपमा सुनी तां गुरू साहब नूं सवाल कर दित्ता कि जदों तुसी मन्नदे हो कि सन्यास उतम है तां फिर तुसी क्यो ग्रिसत धारन कीता है? किते सन्यास दे कठिन मारग तों डर के तां नही छड्ड आए?

गुरू साहब ने केहा कि मैं उनां रूहां दी चरन धूड़ हां जिन्नां नूं परमेशर नूं मिलन दी तांघ है। मैं इस करके तुहानूं डंडाउत कीती है। पर मैं इह हरगिज़ नही मन्नदा कि मिलाप लई जेहड़े रसते लोक अखत्यार करदे हन उह सारे दरुसत होन। गुरू साहब ने धरम दे राह ते अपणाए जा रहे वक्ख वक्ख तौर तरीक्यां नूं ब्यान कीता ते उनां दा खंडन कीता।

गुरू साहब ने केहा जे तुसां नूं प्रीतम नूं मिलन दी तांघ है तां जरूरी नही कि तुसी घर बार ही छड्ड जायो। जरूरी है असी करते दी रजा विच्च रहीए। परमेशर दी सिफत सालाह नाल साडी होशी बुद्ध आपे टिकाने आ जाएगी। बस ग्रिसत विच्च ही बन्दा इउ रहे जिवे सन्यास विच्च है। सन्यास हऊमै तों लैना है।

पर सभ तों जरूरी है बन्दा सच्च दी पउड़ी ते पैर रक्खना शुरू करे। जदों तुसी सच्च ते आओगे रजा वाला जीवन शुरू हो जाएगा। सच्च तों बाद गल्ल चलनी है रब्ब दे जस्स दी जां नाम दी। इह भेख वेख करने सभ फजूल ने। सन्यास दा धरम दर असल है ही गैर कुदरती। इह रजा तों बाहरा हो जांदा है।

साहब ने मरदाने नूं सुचेत कीता तां मरदाने ने आसा राग दी धुन्न छेड़ी। बेले दे इस सुन्न सान महौल विच्च रबाब वी इओं गूंजदी सी जिवे ढोल वज्जदा है। फिर कीरतन विच्च संगत दा वी साथ सी। शबद सी:-

आसा महला 1 ॥ ग्रेहु बनु समसरि सहजि सुभाय ॥ दुरमति गतु भई कीरति ठाय ॥ सच पउड़ी साचउ मुखि नांउ ॥ सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥1॥ मन चूरे खटु दरसन जानु ॥ सरब जोति पूरन भगवानु ॥1॥ रहाउ ॥ अधिक त्यास भेख बहु करै ॥ दुखु बिख्या सुखु तनि परहरै ॥ कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥ दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥2॥ सिफति सलाहनु सहज अनन्द ॥ सखा सैनु प्रेमु गोबिन्द ॥ आपे करे आपे बखसिन्दु ॥ तनु मनु हरि पह आगै जिन्दु ॥3॥ झूठ विकार महा दुखु देह ॥ भेख वरन दीसह सभि खेह ॥ जो उपजै सो आवै जाय॥ नानक असथिरु नामु रजाय ॥

साधू दी अकल दे बन्द दरवाजे खुल्ल गए। कहन्दा गुरू जी मैं हुन तेरा। मैनूं हुकम करो। गुरू साहब ने केहा मेरा नां बनो आपना बणो। निरंकार दा बणो। कहन लग्गा दस्सो हुन मेरे लई की राह है? गुरू साहब ने केहा

कि वेखो कुदरती तौर ते तुसी जीवन किथ्ते जिय सकदे हो ओथों दे हो जायो। जे पिच्छे कोयी हैगा, घर जाना तां घर चले जायो जां जिथ्ते सन्यास विच्च रह रहे सी ओथे रह के लोकायी दा उधार करो।

साधू कुझ महीने करतारपुर ही रह ग्या। भेख लाह सुट्या। ते वापस आपने टिकाने ते पहुंच के लग्गा गुरमत दा प्रचार करन।

---◈---

आपे रब्ब घड़ह के उस दी पूजा करदे ने! ੴ
तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥

फरवरी 1524 (बसंत दे दिन)

गुरू साहब करतारपुर बिराजे होए सन कि इक दिन साधूआं दा टोला आ ग्या। अखे

"हम ने सुना यहां बाबा नानक बसते है। ओह कुझ अलग्ग ही बात कर रहे हैं। सुने तो सही कया कहते है!"

सिक्खां ने साधूआं दा सवागत कीता। गरम पानी नाल पैर धुआए। गरम गरम दुद्ध प्याया। साधूआं नूं बेनती कीती कि कुझ देर अराम फरमायो। लौढे वेले दा दीवान लग्गन वाला है उस विच्च गुरू साहब नाल वारतालाप कर लैणा। साधूआ पुच्छ्या कि रात रहन दा एथे इंतजाम है? सिक्खां दस्स्या कि जिथ्ते असी सौवांगे ओथे तुसी वी नाल पै जाणा। धरमसाल विच्च वाधू था है।

लौढे वेले दा दीवान शुरू होया। गुरू साहब ने आए साधूआं नूं नमसकार कीती। सुक्ख सांद पुच्छी। आपस विच्च जान पछान वी कीती। क्युकि गुरू साहब हिन्दुसतान दे सारे तीरथ तां गाह आए सन। बहुते चक्रवरती साधू उंज वी गुरू साहब नूं जाणदे ही सन।

साधूआं ने केहा, "नानक जी आप ने तो कमाल कर दिया। जंगल में मंगल लग्गा रक्खा है" लग्गे महौल दी उपमा करन। किते लह लहाउदे कनक दे खेत। किते सरों ने खट्टा रंग खलार्या होया सी। सरकड़े दे चिट्टे फुलां ने इउ सारा महौल चांदनी कीता होया है। इक बसंत दा मौसम ते दूसरा मंड दा इलाका साधू तां महौल वेख ही विसमादित होयी जा रहे सन।

गुरू साहब ने साधूआं नूं बेनती कीती कि गोबिन्द जनों की हुकम लै के आए हो? अग्गो साधूआ केहा बाबा जी असी तुहाडा उपदेश सुणना चाहुन्दे हां। क्युकि असी जाणदे हां कोयी महा पुरख कहन्दा सालग्राम (पत्थर दा लिंग) दी पूजा करो। कोयी कहन्दा दमोदर जी नूं ध्यायो, कोयी देवाले जान वासते जोर पाउदा, कोयी कहन्दा देवी दे दर जायआ करो। कोयी कहन्दा बन्दे दे मन विच्च ही ठाकुर है उस दी अराधना करो।

सो बाबा जी दस्सो केहड़े रब्ब दी पूजा करीए? उहदी मूरती केहो जेही बणायी जाए?

गुरू साहब उनां दे सवाल सुन के मुसकराए। गुरू साहब ने उनां दे सवाल नूं अणसुण्या करके उना नूं पुच्छ ल्या कि किवे लग्ग रेहा है इथे? उह लग्ग पए तारीफां करन।

गुरू साहब ने साधूआं नूं पुच्छ्या कि उह सर्हों किस ने बणायी है? उह सरकड़े दे चिट्टे फुल्ल किस ने लाए ने? उह मैं नही लाए।साधू कहन लग्गे हां उह सभ भगवान दी किरपा है।

गुरू साहब ने केहा जदों सानूं पता है कि स्रिसटी उस दी रचना है तां फिर उस वासते दूसरी मूरती क्यो बणाईए? क्यु नां उहदी रचनां विचों ही लभ्भीए? जदों साडे कोल उहदी बणायी मूरत हैगी आ तां सानूं दूसरियां मूरतियां घड़न दी की जरूरत?

साधू इशारा समझ गए। सारे बोल उठे धन्न गुरू नानक! धन्न बाबा नानक!!

मरदाना तां पहलां ही गुरू साहब ने इशारे दी उडीक विच्च सी। साहब ने जदों उस वल तक्क्या मरदाने ने झट्ट बसंत दी धुन्न खिच्च दित्ती।

महला 1 बसंतु ॥ रुति आईले सरस बसंत माह ॥ रंगि राते रवह सि तेरै चाय ॥ किसु पूज चड़ावउ लगउ पाय ॥1॥ तेरा दासनि दासा कहउ राय ॥ जगजीवन जुगति न मिलै काय ॥1॥ रहाउ ॥ तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥ किसु पूज चड़ावउ देउ धूप ॥ तेरा अंतु न पायआ कहा पाय ॥ तेरा दासनि दासा कहउ राय ॥2॥ तेरे सठि सम्बत सभि तीरथा ॥ तेरा सचु नामु परमेसरा ॥ तेरी गति अविगति नही जाणीऐ ॥ अणजानत नामु वखाणीऐ ॥3॥ नानकु वेचारा क्या कहै ॥ सभु लोकु सलाहे एकसै ॥ सिरु नानक लोका पाव है ॥ बलेहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥4॥2॥

गुरू साहब ने फिर व्याख्या च दस्स्या। उहदी रचना ही निरंकार दा असली रूप है। मत पत्थर घड़ घड़ के नकली रूप बणायो। उहदी रचना नाल प्यार। जियां नाल मुहब्बत। वनस्सपती दी कदर।

---◈---

करम कांड फजूल ने। करते नूं दिलों याद कीता ही परवान ੴ

गुरू साहब करतारपुर बिराजमान सन कि साधूआं ने फिर सवाल जवाब शुरू कर दित्ते। अज्ज सवाल इह कीता कि कई लोक अकाल पुरख नाल मेल लई तप करदे हन, कई जप करदे ने, कोयी वड्डा संजमी बणदा है, कोयी कहन्दा कि बन्दा बस सबर संतोखी हो जावे, कई लोक वरत रक्खदे ने अते भुक्खे रहन्दे ने, कई ब्रहमचारी बण जांदे ने ते इन्दरियां ते काबू पाउन लई जद्दोजहद करदे ने, कई धरमसाला बना के बह जांदे ने, कोयी रब्ब दे नां ते नच्चदा हे, कोयी तीरथ यातरा करदा है, कोयी हट्ठ जां जिद्द करके ही बह जां खलो जांदा है, कई साह दे अन्दर-बाहर निकलन ते ध्यान ला के साह कंटरोल करदा है, कोयी घर बाहर ही छड्ड जांदा है, कोयी नंगा ही हो जांदा है, कई सिरफ दुधाधारी भाव दुद्ध दे आसरे ही जीन लग्ग जांदे ने अते होर कुझ खांदे ही नही हन, कोयी आपने आप सिद्ध कहाउदा है,

कोयी दिगम्बर जैनी बण जांदा है, कोयी कहन्दा मैं ग्यान लै ल्या अते कोयी कहन्दा मैं शेख हां। मतलब इस तरा दे अनेकां फिरके हन अते निरंकार दे वक्ख वक्ख राह अखत्यार कीते होए ने लोकां ने। पर गुरू जी किरपा करो ते इह दस्सो कि परमेशर प्रापती दा सभ तों वधिया तरीका केहड़ा है।

गुरू साहब ने साधूआं नूं समझायआ कि रब्ब नूं खुश करन दा ओहो तरीका है जिस तरीके असी किसे इनसान नूं खुश कर सकदे हां। भाव सिफत सलाह : अगले दी वड्यायी करनी ते दिलों मुहब्बत करनी। आपां लक्ख करम कांड करी जाईए जे दिल विच्च मुहब्बत नही जागी तां सभ विअर्थ।

जदों तुसी किसे दी वड्यायी करदे हो तां उहदी सिफत विच्च गीत वी गाउदे हो। सो उहदी याद विच्च गाउना वी चंगा तरीका है।

गुरू साहब ने फिर आसा राग विच्च सबद गाव्या:-

आसा महला 1 ॥ मै गुन गला के सिरि भार ॥ गली गला सिरजणहार ॥ खाना पीना हसना बादि ॥ जब लगु रिदै न आवह यादि ॥1॥ तउ परवाह केही क्या कीजै ॥ जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥1॥ रहाउ ॥ मन की मति मतागलु मता ॥ जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता ॥ क्या मुहु ले कीचै अरदासि ॥ पापु पुन्नु दुइ साखी पासि ॥2॥ जैसा तूं करह तैसा को होइ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ जेही तूं मति देह तेही को पावै ॥ तुधु आपे भावै तिवै चलावै ॥3॥ राग रतन परिया परवार ॥ तिसु विचि उपजै अंमृतु सार ॥ नानक करते का इहु धनु मालु ॥ जे को बूझै एहु बीचारु ॥4॥9॥

—◈—

जदों साधूआं गुरू साहब दी तारीफ कर दित्ती

गुरू साहब दा वख्यान सुन जदों कोयी गुरू साहब दी सोभा कर दिन्दा तां साहब वैराग विच्च आ फिर निरंकार नूं याद करन लग्ग जांदे ते दुहायी दिन्दे कि साडी काहदी सिफत, सिफत करनी है तां रब्ब दी करो। एसे तरां इक दिन सांधूआ ने साहब दी जदों उसतत कर दित्ती तां गुरू साहब ने झट्ट मरदाने नूं सुचेत करके शबद रच्या ते गाव्या जिस विच्च दीवान दे सारे जिय शामल होए।

सोरठि महला 1 ॥ हउ पापी पतितु परम पाखंडी तू निरमलु निरंकारी ॥ अंमृतु चाखि परम रसि राते ठाकुर सरनि तुमारी ॥1॥ करता तू मै मानु निमाने ॥ मानु महतु नामु धनु पलै साचै सबदि समाने ॥ रहाउ ॥ तू पूरा हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ तुझ ही मन राते अहनिसि परभाते हरि रसना जपि मन रे ॥2॥ तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥ अहनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे ॥3॥ अवरु न दीसै किसु सालाही तिसह सरीकु न कोयी ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति जान्या सोयी ॥4॥

—◈—

इकट्ठे हो पंडतां ने आ सवाल कीता,

"बाबा सुणिऐ तूं अवतारां नूं नही मन्नदा" ◈

जदों ब्राहमन करतारपुर साहब आए तां गुस्से विच सन। उहनां नूं पता लग्गा कि गुरू नानक दस्स अवतार दे सिधांत नूं नही मन्नदा। दूसरे पासे गीता कहन्दी है कि इक वेरां भगवान ने केहा सी:

"यदा यदा ही धरमस्या, गलानीर भवती भारत॥ अभ्युतथानम अध्रमस्या तदतमानाम सरजमे अहुंम॥"

मतलब ऐ भारत! जदों जदों धरम दी हानी हुन्दी है तां अधरम दा नास करन लई मैं जनम लैंदा हां।

इस ते गुरू साहब ने अखौती अवतारां दी असलियत दे बखेड़े भरी संगत विच उदेड़े।

मिसाल दे तौर ते साहब ने सवाल कीता कि मैनूं इह दस्सो कि वड्डा कौन है जिस ने इह सारी कायनात इह धरती, पौन, पाणी, बनासपती ते जीवां दी रचना कीती ते दूसरे पासे उह इनसान (राम) जिस ने रावन नूं मार्या सी। साहब ने एसे तरां फिर भगवान कृष्ण, जां ब्रहमा आदि दे कारनामे गिना गिना के दस्स्या कि सरबव्यापक अकालपुरख नाल इहनां दा की मुकाबला? साहब ने केहा हां मैं उस निरंकार दा उपाशक हां जिस ने सारे जीव जंतू पैदा कीते हन इथों तक कि तुहाडे अखौती अवतार वी। क्युकि इहनां अखौती अवतारां दे कुझ काले कारनामे वी हैन अते जदों गुरू साहब ने उह सारियां गल्लां विदवान पंडतां नूं बड़े प्रेम नाल सुणाईआ तां उह ला जवाब सन। साहब ने उहनां नूं समझायआ कि जां तां इह पाखंडवाद छड्डो नही तां लोकां ने तुहानूं छड्ड जाना है। साहब दा हो सकदा इशारा वद्ध फैल रहे इसलाम वल सी। ओदों करतारपुर विखे फिर इह शबद गायआ:

आसा महला 1 ॥ पउनु उपाय धरी सभ धरती जल अगनी का बंधु किया ॥ अंधुलै दहसिरि मूंडु कटायआ रावनु मारि क्या वडा भया ॥1॥ क्या उपमा तेरी आखी जाय ॥ तूं सरबे पूरि रहआ लिव लाय ॥1॥ रहाउ ॥ जिय उपाय जुगति हथि कीनी काली नथि क्या वडा भया ॥ किसु तूं पुरखु जोरू कउन कहीऐ सरब निरंतरि रवि रहआ ॥2॥ नालि कुटम्बु साथि वरदाता ब्रहमा भालन स्रिसटि गया ॥ आगै अंतु न पाययो ता का कंसु छेदि क्या वडा भया ॥3॥ रतन उपाय धरे खीरु मथ्या होरि भखलाए जि असी किया ॥ कहै नानकु छपै क्यु छप्या एकी एकी वंडि दिया॥

अज्ज इतहासकारां ने साबत कीता है कि अखौती अवतार वक्ख वक्ख सम्यां विच होए राजे सन। पड़ के हैरानी हुन्दी है कि पंचम नानक ने पहलां ही इह गल दस्स दित्ती सी।

जुगह जुगह के राजे कीए गावह करि अवतारी ॥
तिन भी अंतु न पायआ ता का क्या करि आखि वीचारी॥

—◈—

साधूआं पुच्छ्या, "कुझ लोक चंगा खांदे पींदे, पहनदे, मसत रहन्दे ने। अग्गा केहने वेखिऐ?"

साधूआं दे इस सवाल ते कि जेहड़े लोक खांदे पींदे खुशी खुशी जिन्दगी बिसार रहे ने उहनां दा भविख की? साहब ने फरमायआ कि करता पुरख निरंकार ने स्रिसटी विच वन्नगी पैदा कीती है। इह लोक जेहड़े निसचिंत हो के जीवन जिय रहे ने पशूआं दी न्यायी हन। जिन्नां नूं निरंकार दी होंद दी सोझी नहीं हुन्दी।इह सच्च है कुझ लोक अजेहे हुन्दे हन उह जीवन बारे सोचदे ही नहीं हन। दूसरे पासे उह इनसान हन जो जीवन अते मौत बारे मन ही मन विच वीचार करदे हन। इहनां वीचारां उपरंत फिर उहनां नूं नाम दी सोझी पैंदी है। नाम ध्यावन उपरंत जेहड़ी अनन्द दी अवसथा प्रापत हुन्दी है उह सदीवी हुन्दी है जदों कि पशू बिरती वाले लोक कदी बहुत दुखी ते कदी बहुत सुखी हो जांदे हन। मिसाल दे तौर ते पशू ब्रिती वाले लोकां दे प्रवार विच जदों मौत फेरा पाउदी है तां इह पूरी तरां टुट्ट जांदे हन जदों कि ग्यानी पुरख उहदे भाने विच खुश ही हुन्दे हन। साहब ने इस मौके शबद केहा:-

सिरीरागु महला 1 ॥ ध्रिगु जीवनु दोहागनी मुठी दूजै भाय ॥ कलर केरी कंध ज्यु अहनिसि किरि ढह पाय ॥ बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाय ॥1॥ मुंधे पिर बिनु क्या सीगारु ॥ दरि घरि ढोयी न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥1॥ रहाउ ॥ आपि सुजानु न भुलयी सचा वड किरसानु ॥ पहला धरती साधि कै सचु नामु दे दानु ॥ नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसानु ॥2॥ गुर कउ जानि न जानयी क्या तिसु चजु अचारु ॥ अंधुले नामु विसार्या मनमुखि अंध गुबारु ॥ आवनु जानु न चुकयी मरि जनमै होइ खुआरु ॥3॥ चन्दनु मोलि अणायआ कुंगू मांग संधूरु ॥ चोआ चन्दनु बहु घना पाना नालि कपूरु ॥ जे धन कंति न भावयी त सभि अडम्बर कूड़ ॥4॥ सभि रस भोगन बादि हह सभि सीगार विकारे ॥ जब लगु सबदि न भेदीऐ क्यु सोहै गुरदुआरि ॥ नानक धन्नु सुहागनी जिन सह नालि प्यारु ॥5॥13॥

—◈—

रचना नूं ही रब्ब दा सरीर समझ्यो

इक वेरां करतारपुर विखे ही साहब बिराजमान सन कि दो तिन्न बहुत ही ग्यानवान पड़्हे लिखे ग्रिसती बन्दे आ हाजिर होए। इक कहन लग्गा कि बाबा जी सुणीदा तुहाडे ते परमेशर बड़ा मेहरबान है। असी निरंकार बारे विचारां करद्यां जिन्दगी कढ्ढ दित्ती है कि उह केहो जेहा होवेगा? बड़े साधू संतां नाल वी गल्लां बातां हुन्दियां रहन्दियां ने किसे ने वी इह नही दस्स्या कि रब्ब दी शकल सुरत केहो जेही है?

केहा जांदा है कि गुरू साहब अजेहे विदवान दे आउन ते बहुत खुश हुन्दे सन। उनूं नमसकारां करदे सन क्युकि करतारपुर ज्यादातर लोक आपने दुन्यावी मसले लै लै आया करदे सन। प्रमेशर दा खोजी कोयी विरला ही हुन्दा सी। गुरू साहब ने अजेहे जग्यासू दी भरे दीवान तारीफ कीती।

गुरू साहब ने सारी संगत नूं दस्स्या कि भायी इह सारी रचना, सारी स्रिसटी, इह ब्रेहमंड सभ उस रब्ब दा ही रूप है। इह ही उस दा सरीर है। इस रचना तों जो अवाज़ा पैदा हो रेहा है, इह ही उस दे बोल ने। सभ पासे उस एके दा ही पसारा है।

किते जीव मर रेहा है किते पैदा हो रेहा है, इह सभ करते दे रूप वटाउन दा खेल है। उहदे तों बगैर होर कोयी खिलाड़ी नही है। दूसरा मायआ दा खेल वी ओसे ने ही पैदा कीता है। बुरायी वी ओसे ने ही पैदा कीती है। बस असी जीव खेड रहे हां। सानूं साडी असलियत दा अहसास ही नही। सारा खेल उस एके दा ही है अते उह बेअंत है।

वख्यान देन तों बाद गुरू साहब फिर वैराग विच्च आए ते मरदाने नूं इशारा कीता। सारा दीवान गुरू साहब दे मगर गूंज उठ्या, "साहब मेरा एको है, एको है भायी एको है"। ढोलकियां शैण्यां खड़तालां ने जंगल विच्च मंगल ला दित्ता। हर कोयी सरूर विच्च सी। हर पासे मसती सी। हर कोयी झूम उठ्या। शबद आसा राग विच्च सी:-

आसा महला 1 ॥ जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु कायआ तेरी ॥ तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ मायी ॥1॥ साहबु मेरा एको है ॥ एको है भायी एको है ॥1॥ रहाउ ॥ आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ ॥ आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥2॥ जो किछु करना सो करि रहआ अवरु न करना जायी ॥ जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वड्यायी ॥3॥ कलि कलवाली मायआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥ आपे रूप करे बहु भांतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥4

—◈—

"मैनूं तां सारा संसार ही शराबी होया दिसदा है"

जदों शराबियां खिलाफ साधूआं शकायत कीती सी तां

लोकां दियां ज्यादा दुनियावी मंगां आउन ते गुरू साहब कदी अक्क जांदे सन ते इकांत वल चले जांदे सन। एसे तरां इक वेरां करतारपुर विखे बैठे सन कि उनां दी मौज आई ते मरदाने नूं नाल लई रावी कंढे (पिंड धरमकोट दी हद्दद अन्दर) जा बिराजे। हौली हौली शरधालूआं नूं पता लग्गा तां उह रावी कंढे ही आउने शुरू हो गए।

कुझ समें बाद करतारपुर कुझ साधू आ गए ते कहन लग्गे कि सुणिऐ बाबा नानक इथे आए होए ने। सेवादारां दस्स्या कि आए ते हैन पर ऐस वकत सुणिऐ रावी कंढे बैठे होए ने। साधू वी उडीकन दी थां जित्थे दस्स्या गया सी रावी वल नूं ही हो तुरे।

संगीत दी आवाज ने दूरों ही साधूआं नूं गुरू साहब दे

टिकाने दा पता दस दित्ता।

साधूआं नूं मिल के गुरू साहब ने खिमा याचना कीती कि महातमावां नूं खेचल होयी है इथे आउन अते कहन लग्गे कि चलो डेरे चलदे हां। पहलां लंगर पानी फिर गोशटी होवे। साधूआं ने केहा कि तुहाडे डेरे दे सेवादारां सानूं संतुशट करके भेज्या है कि ते हुन सिरफ तुहाडे वीचार सुनन दी सानूं भुक्ख है।

इह गल्लां चल रहिया सन कि लागे ही शोर शराबा हो ग्या। दस बारा मुंडे रावी कंढे बह के दारू पी रहे सन कि उनां विच्च लड़ायी हो गई। मरदाने ने दस्स्या कि इना ने किते शिकार (हरन आदि) मार्या है ते इथे ही रिन्न बना के खा रहे सन ते नाले शराब पी रहे सन।

गुरू साहब ने केहा कि इनां नूं नजरअन्दाज़ करो।

पर मुंडे चीकां मार रहे सन। बकरे बुला रहे सन कि साधूआं दा ध्यान भटक रेहा सी। साधू ओनां नूं बुरा भला आख रहे सन कि पी पी के इह लोक अन्ने होए पए ते इनां दी बुद्ध भ्रिशट होयी पई है। नशे विच्च इह आपना खुद्द दा वी नुकसान कर रहे हन। स्ट्ट पेट वी लग्गन दा खतरा है।

साधूआं जिवे गुरू साहब दा इस बाबत विचार जानना चाहआ तां साहब ने फरमायआ कि साधू जनो मैनूं तां सारा संसार ही शराबी होया दिसदा है। होश किसे नूं वी नही। जीवन दी सच्चायी कोयी वी नही समझ रेहा। वेखो कोयी मोह दे नशे विच्च गलतान है कोयी काम दे नशे विच्च कोयी क्रोध करके शुदायी होया प्या है, कोयी हंकार विच्च ही सड़ी भुज्जी जा रेहा है।

साधूआं नूं गल्ल झट्ट समझ आ गई कि इह तां वड्डी सच्चायी है कि बन्दा सारी उमर मायआ दे नशे विच्च ही बतीत कर दिन्दा है। उनूं अहसास ही नही हुन्दा ते नां ही ध्यान जांदा है कि इक दिन सभ कुझ छड्डना पैना है। भाव सच्चायी नूं हर किसे ने वसार्या हुन्दा है। इनसान झूठ दे नशे विच्च है।

एने नूं मरदाने ने गुरू साहब तों इजाजत लई कि साहब अज्ज मैनूं शबद कहन द्यो। गुरू साहब मरदाने दी बेनती ते बहुत खुश होए ते मरदाने नूं थापड़ा दित्ता कि अज्ज तूं बोल बाणी। मरदाने ने सलोक बोल्या:-

सलोकु मरदाना 1 ॥ कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥ क्रोध कटोरी मोह भरी पीलावा अहंकारु ॥ मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥ करनी लाहनि सतु गुड़ सचु सरा करि सारु ॥ गुन मंडे करि सीलु घ्यु सरमु मासु आहारु ॥ गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाह बिकार ॥1॥ मरदाना 1 ॥ कायआ लाहनि आपु मदु मजलस त्रिसना धातु ॥ मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जमकालु ॥ इतु मदि पीतै नानका बहुते खटियह बिकार ॥ ग्यानु गुड़ सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥ नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥2॥ कांयां लाहनि आपु मदु अंमृत तिस की धार ॥ सतसंगति स्यु मेलापु होइ लिव कटोरी अंमृत भरी पी पी कटह बिकार ॥3॥

हर कोयी बोल उठ्या वाह भायी मरदाना वाह मरदाना। धन्न गुरू नानक। धन्न गुरू नानक। वाहगुरू। वाहगुरू।

---◆---

माता पिता दा चलाणा*

जिवे पिच्छे आ चुक्का है गुरू साहब ने आपण्यां माप्यां ते वी किरपा कीती ते उनां नूं वी नाम दी दात बखशी। अजेही बखशश होयी कि दोवां दा मन्न वी नाम विच्च लग्गना शुरू हो गया। पिता कालू दा हुन मायआ मोह घट्ट चुक्का सी। उनां नूं वी करते दे खेड अते सच्च दी समझ पै चुक्की सी। पहलां तां दीवान दे कंमां विच्च टोका टोकायी वी कर्या करदे सन पर हुन मन्न संतोख विच्च आ चुक्का सी। हां पोतर्या दे घर उलाद नही सी इस करके कदी गुरू साहब नूं ताकीद करदे कि लखमी चन्द दे व्याह दा कुझ करो।

खैर कतक 1581 बिकरमी मुताबिक 1524* ई नूं माता त्रिपता थोड़ा चिर ढिल्ली मट्ठी रह के करतारपुर विखे चलाना कर गए।। ओदों गुरू साहब करतारपुर विखे ही मौजूद सन। गुरू साहब ने ब्राहमनी रीतां रसमां नूं दर किनार करके माता दा अंतम ससकार कीता अते कई दिन लग्गातार उनां दी याद नूं समरपत शबद कीरतन चलदे रहे।

ओसे साल ही कुझ दिनां दे अरसे मगरो 27 माघ 1581 (फरवरी 1525 ई पिता महता कालू वी चड़्हायी कर गए। गुरू साहब ओदों पंजाब दे ही किसे इलाके विच्च सन। मिरासी भेज के गुरू साहब नूं सद्द ल्या ग्या। जदों तक्क सहबजाद्यां बाबा स्री चन्द अते लखमी दास ने आपनी मरजी अनुसार ब्राहमनी रीतां पालदे होए दादा दा ससकार कर दित्ता। उदों करतारपुर गुरसिक्खां ने रोस वी जितायआ पर साहबजाद्यां आपनी मरजी कीती।

बाद विच्च गुरू साहब दे परतन ते पिता कालू दे कल्यान वासते कीरतन दे प्रवाह चलदे रहे। गुरू साहब दे परतन उपरंत कोयी ब्राहमनी रसम नही चलन दित्ती गई।

---▲---

ਪੈੜ ਮਡਾ

◆ सोढी 2-209, व सोढी 2-212 सोढी 2-218
◆ सोढी 2-218 ◆ सोढी 2-223 ◆ सोढी 2-225
◆ सोढी 2- 619 य सोढी 2-225 ◆ सोढी 2-515

*16 वी सदी विच क्रोड़ां लोक छूआ छूत दियां बीमारियां नाल मरे सन। ईरान तों बहुत लोक भज्ज के पंजाब वल आ गए सन। हो सकदै महता कालू, माता त्रिपता, बेबे नानकी अते भाईआ जैराम दे चलाने दा कारन वी कोयी छूआ छूत दी बीमारी बनी होवे। क्युकि लिखारियां ने लिख्या है कि इहनां सुभागे जोड़्यां दा अंतम समां नाल नाल ही होया है।

http://jhr.ui.ac.ir/article_22654.html

* इह तरीकां खजान- 106 ने दित्तियां हन। नवी खोज अनुसार असां दो साल दा वाधा कर दित्ता है।